International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जयपुर जिले में जनसंख्या वितरण व घनत्व का तहसीलवार अध्ययन

रंजिता यादव

शोधार्थी, भूगोल विभाग, गुरु गोविन्द जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.)

सारांश

मानव संसाधन को किसी भी भौगोलिक क्षेत्र के आर्थिक विकास का केन्द्र बिन्दू माना जाता है। किसी भी क्षेत्र या प्रदेश का विकास वहां के मानव संसाधन के विकास पर ही निर्भर करता है। यदि मानव संसाधन उच्च कौशल व तकनीकी ज्ञान से युक्त होगा तो वह प्रदेश विकसित अवस्था में होगा तथा यदि मानव संसाधन तकनीकी रूप से कमजोर या कौशल युक्त नहीं होगा तो उस क्षेत्र के संसाधनों का समुचित उपयोग नहीं होने से वह पिछड़ी अवस्था में रहेगा। जनसंख्या तथा वहां के संसाधनों में समुचित तालमेल ही उस क्षेत्र के विकास का स्तर तय करता है। किसी भी प्रदेश में जनसंख्या व संसाधनों का अनुकूलतम वितरण होना उस क्षेत्र के भविष्य के लिए उपयोगी होता है।

मुख्यशब्द: मानव संसाधन, केन्द्र बिन्दू, उच्च कौशल, तकनीकी ज्ञान, अनुकूलतम वितरण

प्रस्तावना

किसी क्षेत्र के समग्र विकास में वहां के मानव संसाधन का सबसे बड़ा योगदान होता है। मानव अपनी शिक्षा, तकनीकी, ज्ञान, विज्ञान का प्रयोग करके प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर रहा है, जिससे सांस्कृतिक पर्यावरण का जन्म होता है। किसी क्षेत्र का विकसित सांस्कृतिक पर्यावरण, वहां के उच्च मानव संसाधन विकास के बारे में बताता है। अतः किसी क्षेत्र के जनसंख्या वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, कार्यशील जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक है, ताकि वहां के सांस्कृतिक पर्यावरण एवं मानव संसाधन विकास के बारे में जानकारी हो यसके। विश्व में कुल जनसंख्या के दृष्टिकोण से भारत का दूसरा स्थान है। उन्नत शिक्षा, तकनीकी, उच्च बौद्धिक क्षमता के द्वारा भारत अपनी कुल जनसंख्या के एक अच्छी परिसम्पत्ति बनाने की ओर अग्रसर है। अतः धीरे–धीरे ज्ञान–विज्ञान के द्वारा भारत अने मानव संसाधन को बेहतर बनाने की ओर अग्रसर है।

अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the study):-

प्रस्तुत शोध पत्र के उद्देश्य इस प्रकार है–

1. जयपुर जिले में तहसीलवार जनसंख्या वितरण का विश्लेषण करना।
2. जयपुर जिले में जनसंख्या घनत्व का विश्लेषण करना।
3. जयपुर जिले में जनसंख्या वितरण के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।

अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

राजस्थान के उत्तरी–पूर्वी भाग में स्थित जयपुर जिले की भौगोलिक स्थिति $26^0 23'$ उत्तरी अक्षांश से $27^0 51'$ उत्तरी अक्षांश तथा $74^0 55'$ पूर्वी देशान्तर से $76^0 50'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जयपुर जिला राजस्थान की राजधानी है। अक्षांशीय दृष्टि से जयपुर जिला उत्तरी गोलार्द्ध में कर्क रेखा से उत्तर में स्थित है। जयपुर जिले की उत्तरी सीमा पर हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला, उत्तरी–पूर्वी सीमा पर अलवर, पूर्वी सीमा पर दौसा, दक्षिणी सीमा पर टोंक, द.प. सीमा पर अजमेर तथा पश्चिमी सीमा पर नागौर व उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर सीकर जिला स्थित है। जयपुर जिले का कुल क्षेत्रफल 11143 वर्ग किमी है। जयपुर क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का 9वां सबसे बड़ा जिला है। जो राजस्थान के 3.30: भू–भाग पर विस्तृत हैं।

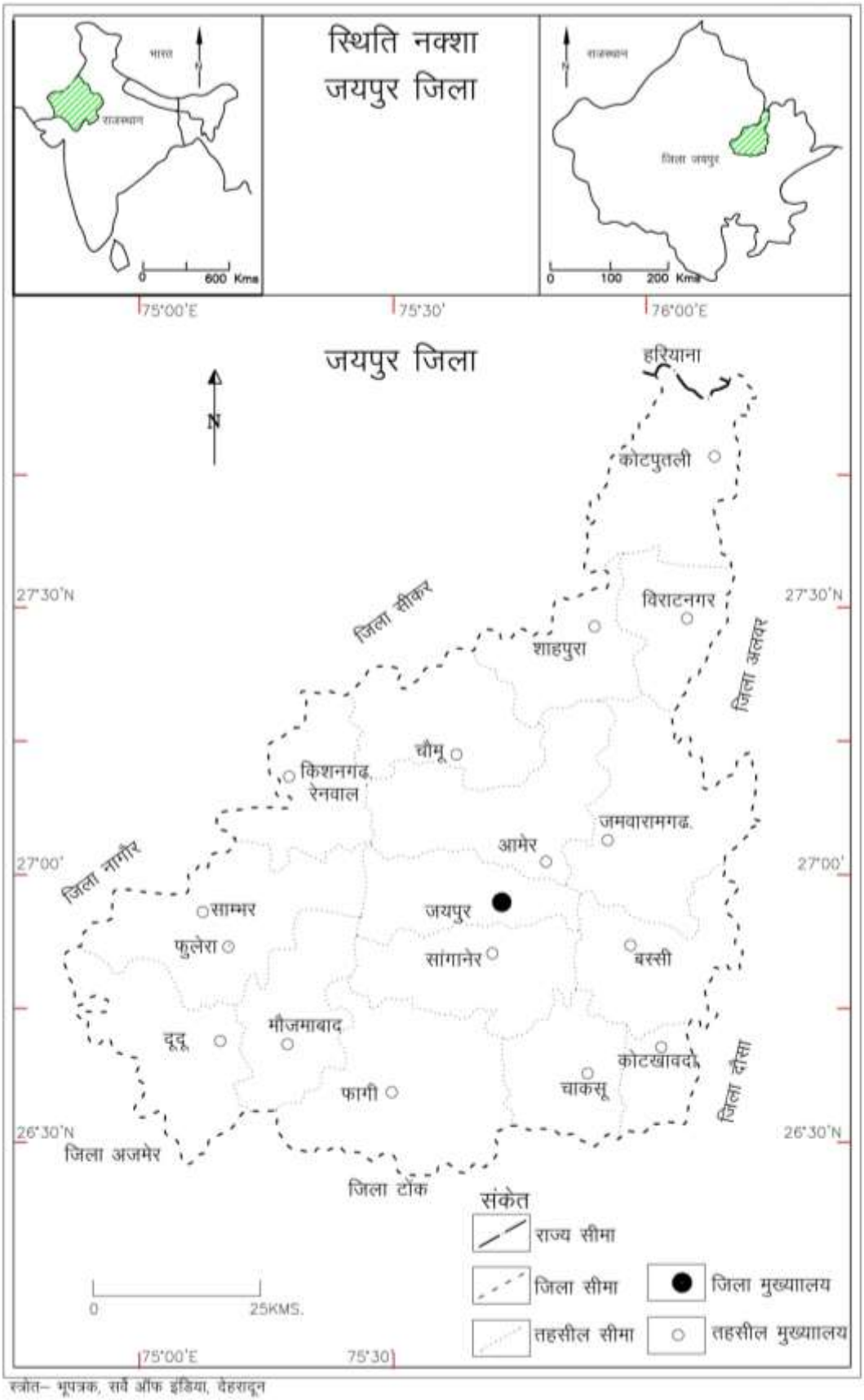

स्त्रोत– भूपत्रक, सर्वे ऑफ इंडिया, देहरादून

साहित्यावलोकन (Review of Literature)

- मौर्य, एस.डी. (2016) ने अपनी पुस्तक 'संसाधन भूगोल' प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद में संसाधनों के नियोजन, संरक्षण व प्रबन्धन पर बल दिया है।
- चौधरी, अल्का तथा प्रियंका (2018) ने अपने शोध लेख "जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व का तुलनात्मक अध्ययनः राजस्थान राज्य के उत्तरी–पूर्वी जिलों के विशेष संदर्भ में" बताया कि राजस्थान के अन्य भागों की तुलना में राज्य के उत्तरी–पूर्वी भाग में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से हुई है जिसमें सर्वाधिक वृद्धि जयपुर जिले में हुई है।
- पालीवाल, राजेन्द्र प्रसाद तथा यादव, नरेन्द्र सिंह (2018) ने अपने शोध लेख "अलवर जिले (ग्रामीण) में मानव संसाधन विकास" में अलवर जिले की जनसंख्या वृद्धि, वितरण, घनत्व तथा कार्यशील एवं अकार्यशील जनसंख्या का विवेचन किया है।
- बाजिया, प्रकाश चन्द (2022) ने अपने शोध लेख "जयपुर जिले की चौमूं तहसील में जनांकिकी संस्थान का बदलता स्वरूप" में जनसंख्या वितरण, वृद्धि, घनत्व, लिंगानुपात का विश्लेषण प्रस्तुत किया है।
- चन्देल, सुरेन्द्र कुमार (2023) ने अपने शोध लेख "बूंदी जिले में जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीकरण की स्थिति का विश्लेषण" में जनसंख्या व नगरीकरण की समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

आंकड़ों के स्त्रोत तथा शोध विधि तंत्र (Source of data and Estimation Approach):-

प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक आकड़ों का संकलन जिला सांख्यिकी रूपरेखा, विभिन्न जनगणना वर्षों की रिपोर्टों के आधार पर विश्लेषणात्मक रूप में किया गया है तथा सारणीयन व दण्ड आरेखों के माध्यम से विश्लेषण किया गया है।

जनसंख्या वितरण एवं घनत्व (Population Distrubution and Density)

किसी भी भौगोलिक प्रदेश की जनसंख्या का प्रारूप भौतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक कारकों से प्रभावित होता है। उत्तम जलवायु, समतल व उपजाऊ भूमि, पर्याप्त जल, खनिज, परिवहन सुविधाएं जिस स्थान पर पर्याप्त होती है वहां जनसंख्या का संकेन्द्रण अधिक पाया जाता है तथा जिन क्षेत्रों/प्रदेशों में उपरोक्त सभी कारक प्रतिकूल होते है वहां पर जनसंख्या का संकेन्द्रण कम पाया जाता है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर जिले में तहसीलवार जनसंख्या सारणी 1 में दर्शायी गयी है–

सारणी–1
तहसीलवार जनसंख्या वितरण (2011)

क्र.सं.	तहसील	जनसंख्या	जिले की कुल जनसंख्या का प्रतिशत
1.	कोटपूतली	4,13256	6.23
2.	विराटनगर	166087	2.50
3.	शाहपुरा	272632	4.11
4.	चौमूं	395009	5.96
5.	फुलेरा (मु. सांभर)	241919	3.65
6.	किशनगढ़ रेनवाल	202186	3.05
7.	मौजमाबाद	109892	1.65
8.	दूदू	103124	1.55
9.	फागी	191126	2.88
10.	सांगानेर	9,69,696	14.63
11.	जयपुर	22,98782	34.69
12.	आमेर	452005	6.82
13.	जमवारामगढ़	30,3236	4.57
14.	बस्सी	2,83594	4.27

15.	चाकसू	140720	2.12
16.	कोटखावदा	82914	1.25
17.	योग	6626178	100

स्त्रोत :– जनगणना 2011

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर की कुल जनसंख्या 6626178 है। जयपुर में जनसंख्या वितरण का विश्लेषण करें तो इसमें क्षेत्रीय असमानता दिखाई देती है। जयपुर तहसील में सर्वाधिक जनसंख्या है यहां जयपुर जिले की कुल जनसंख्या की 34.69 प्रतिशत जनसंख्या है इसके बाद सांगानेर तहसील का स्थान है जिसमें जयपुर की कुल जनसंख्या की 14.63 प्रतिशत जनसंख्या है। इन दोनों तहसीलों में अधिक जनसंख्या का कारण नगरीय क्षेत्र की अधिकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जाए तो चौमूं, आमेर, शाहपुरा तथा कोटपूतली में समतल व उपजाऊ भूमि, परिवहन, जलापूर्ति के कारण जनसंख्या का संकेन्द्रण अधिक देखा जा सकता है वही फुलेरा, दूदू, फागी, चाकसू तहसीलों में मुख्यतः जलापूर्ति की कमी तथा भूमिगत जल स्तर का नीचे होना कम जनसंख्या के लिए प्रमुख उत्तरदायी कारण है। इसके अलावा धरातलीय स्वरूप, जलवायु, कृषि अन्य कारण है।

जनसंख्या घनत्व (Population Density)

जनसंख्या घनत्व क्षेत्रफल तथा आबादी के आनुपातिक सम्बन्ध को दर्शाता है। किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में प्रति इकाई क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों की संख्या को जनसंख्या घनत्व कहते है।

जयपुर जिले में जनसंख्या घनत्व 1961 में 136 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. था, जो बढ़कर 2011 में 595 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. हो गया। सारणी 2 में जयपुर व राजस्थान का घनत्व दर्शाया गया है।

सारणी–2

जनसंख्या घनत्व (2011)

वर्ष	जयपुर	राजस्थान
1961	136	59
1971	177	75
1981	243	100
1991	336	129
2001	471	165
2011	595	200

स्त्रोत : जनगणना 2011

आरेख

जनसंख्या घनत्व (2011)

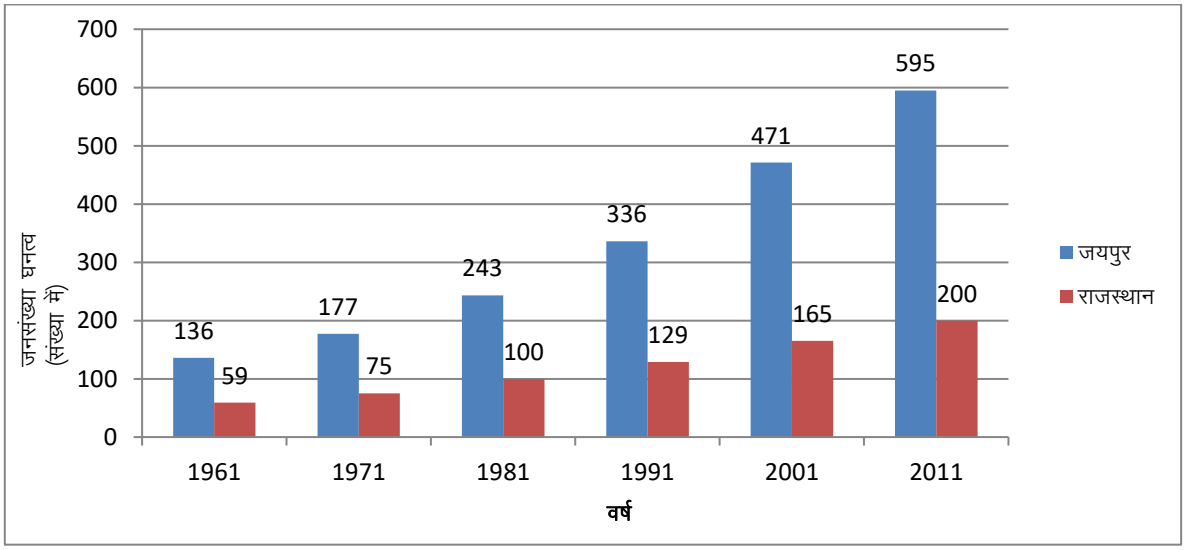

जयपुर जिले में जनसंख्या घनत्व में तहसीलवार भिन्नता देखने को मिलती है। जयपुर जिले में जनसंख्या घनत्व का प्रारूप सारणी 3 में दर्शाया गया है –

सारणी–3

तहसीलवार जनसंख्या घनत्व (2011)

क्र.सं.	तहसील का नाम	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	जनसंख्या	जनसंख्या घनत्व
1.	कोटपूतली	814.34	413256	507
2.	विराटनगर	482.36	166087	344
3.	शाहपुरा	530.96	272632	513
4.	चौमूं	683.61	395009	578
5.	फुलेरा	885.63	241919	273
6.	किशनगढ़ रेनवाल	584.85	202186	346
7.	मौजमाबाद	641.1	109892	171
8.	दूदू	697.46	103124	148
9.	फागी	1114.34	191126	172
10.	सांगानेर	701.75	969696	1382
11.	जयपुर	527.16	2298782	4361
12.	आमेर	891.22	452005	507
13.	जमवारामगढ़	1033.7	303236	293
14.	बस्सी	654.69	283594	433
15.	चाकसू	533.55	140720	270
16.	कोटखावदा	291.47	82914	284
	योग	11143	6626178	200

स्त्रोत : जनगणना 2011

जयपुर जिले को जनसंख्या घनत्व प्रारूप के आधार पर निम्न भागों में बांटा जा सकता है –

1. अति उच्च घनत्व वाले क्षेत्र :– इस वर्ग में 600 से अधिक घनत्व वाली तहसील है। सारणी 3.4 के विश्लेषण में पाया कि जयपुर तहसील (4361) तथा सांगानेर तहसील (1382) अति उच्च घनत्व वाली तहसीले है। यहां अधिक घनत्व के लिए मुख्यतः शहरी क्षेत्र के कारण आधारभूत सुविधाएं, नगरीकरण, औद्योगिकरण प्रमुख है।
2. उच्च घनत्व वाले क्षेत्र :– इस वर्ग में 400–600 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. घनत्व वाले क्षेत्र है जिसमें कोटपूतली (507), शाहपुरा (513), चौमूं (578), आमेर (507), बस्सी (433) है।
3. मध्यम घनत्व वाले क्षेत्र :– इस वर्ग में 200 से 400 घनत्व वाले क्षेत्र शामिल है जिसमें विराटनगर (344), फुलेरा (273), किशनगढ़ रेनवाल (346), जमवारामगढ़ (293), चाकसू (270) व कोटखावदा (284) है।
4. निम्न या कम घनत्व वाले क्षेत्र :– इसमें 200 से कम घनत्व वाले क्षेत्र शामिल है। जिसमें दूदू (148), मौजमाबाद (171) व फागी (172) तहसील शामिल है।

निष्कर्ष व सुझाव (Conclusion and Suggestions):-

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर जिले में 2011 की जनगणना के अनुसार तहसीलवार जनसंख्या वितरण तथा घनत्व का विश्लेषण किया गया है। जनसंख्या का वितरण भौगोलिक कारकों (जलापूर्ति, मिट्टी, उच्चावच, जलवायु,), आर्थिक कारकों (औद्योगिकरण, नगरीकरण, खनिज) तथा सामाजिक व सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होता है।

जयपुर जिले की जयपुर, सांगानेर, चौमूं, शाहपुरा तहसीलों में अधिक जनसंख्या तथा दूदू, मौजमाबाद, फागी तहसीलों में न्यून जनसंख्या वितरण व घनत्व पाया जाता है। जनसंख्या के वितरण को समरूप करने हेतु निम्न सुझाव है–

1. न्यून जनसंख्या वाले क्षेत्रों में औद्योगिक ईकाईयां स्थापित करके आर्थिक कियाकलाप बढ़ाये जा सकते हैं।
2. आधारभूत सुविधाओं जैसे शिक्षा, चिकित्सा, परिवहन, रोजगार में वृद्धि करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. District Census Hand Book 2011, 2015
2. मौर्य, एस. डी (2016): संसाधन भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन इलाहाबाद।
3. जिला सांख्यिकी रूपरेखा 2015, 2020
4. प्रियंका और अल्का (2018)' जनसंख्या वृद्धि एवं घनत्व का तुलनात्मक अध्ययनः राजस्थान राज्य के उत्तर–पूर्वी जिलों के विशेष संदर्भ में, रिसर्च रिव्यू जनरल वॉल्यूम 03
5. पालीवाल, राजेन्द्र प्रसाद तथा यादव, नरेन्द्र सिंह (2018): अलवर जिले (ग्रामीण) में मानव संसाधन विकास, JETIR, December 2018, Volume 5
6. चन्देल, सुरेन्द्र कुमार (2023): बूंदी जिले में जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीकरण की स्थिति का विश्लेषण, श्रृंखला एक शोधपरक विचारक पत्रिका, Vol-X, July 2018